एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जैविक खेती: भविष्य की खेती की दिशा

(जतिन कुमार सिंह[1], शिवांगी शाही[2], रश्मि विश्वकर्मा[3], श्रद्धा त्रिपाठी[4] एवं *प्रद्युम्न कुमार मौर्य[2])

[1]पी.एच.डी. छात्र कीट विज्ञान, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड, 263145

[2]एम.एस.सी. कृषि (कीट विज्ञान), कृषि एवं प्राकृतिक विज्ञान संस्थान, डी डी यू गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, 273009 (उ०प्र०)

[4]एम.एस.सी. कृषि (आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन), कृषि एवं प्राकृतिक विज्ञान संस्थान, डी डी यू गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, 273009 (उ०प्र०)

[3]एम.एस.सी. कृषि (आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन), चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, (250005) (उ०प्र०)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: pkmourya563@gmail.com

जैविक खेती एक ऐसी विधि है जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है, बल्कि प्राकृतिक तरीकों से फसलों को उगाया जाता है। यह विधि न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि यह मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करती है और फसलों की पोषण मूल्य में वृद्धि करती है। इस लेख में, हम जैविक खेती के महत्व, इसके फायदे, और इसके विभिन्न तरीकों पर चर्चा करेंगे। हम यह भी बताएंगे कि कैसे जैविक खेती से हम अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं और अपने पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं।

कीवर्ड: जैविक खेती, प्राकृतिक खेती, पर्यावरण संरक्षण, मिट्टी की गुणवत्ता, फसलों की पोषण मूल्य।

संसार में बढ़ती हुई आबादी एक बहुत बड़ी समस्या है, बढ़ती हुई आबादी के साथ साथ मनुष्यों द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ भी बढ़ती जा रही है | जिसके लिए अधिक से अधिक उत्पादन करने के लिए कई प्रकार के रासायनिक खादें, जहारिलें कीटनाशकों का प्रयोग भी बढ़ता जा रहा है, जो प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थों के मध्य आदान-प्रदान के चक्र (इकोलॉजी सिस्टम) को प्रभावित करता है जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति ख़राब हो जाती है, साथ ही साथ वातावरण दूषित होता है तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में भी गिरावट आती है | प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकुल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थी, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान-प्रदान का चक्र (इकोलॉजी सिस्टम) निरन्तर चलता रहा था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था।

भारत में जैविक खेती का चलन नया नहीं है; यह हज़ारों साल पुराना है। यह कृषि प्रणाली की एक विधि है जिसका मुख्य उद्देश्य भूमि

पर खेती करना और फसलें उगाना है, वो भी ऐसे कि जैविक अपशिष्टों (फसल, पशु और कृषि अपशिष्ट, जलीय अपशिष्ट) और अन्य जैविक सामग्रियों के साथ-साथ लाभकारी सूक्ष्मजीवों (जैवउर्वरकों) का उपयोग करके मिट्टी को जीवित और स्वास्थ्य रखा जा सके, ताकि पर्यावरण अनुकूल प्रदूषण मुक्त वातावरण में स्थायी उत्पादन बढ़ाने के लिए फसलों को पोषक तत्व प्रदान किए जा सकें।जैविक खेती को एक कृषि प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें जानवरों या पौधों के अपशिष्ट या उनके प्रसंस्करण से प्राप्त जैविक उर्वरकों और कीट नियंत्रण उत्पादों का उपयोग किया जाता है। जैविक खेती वास्तव में रासायनिक कीटनाशकों और सिंथेटिक उर्वरकों के उपयोग से होने वाली पर्यावरणीय पीड़ाओं के जवाब के रूप में शुरू की गई थी। दूसरे शब्दों में, जैविक खेती खेती कृषि की एक नई प्रणाली है जो पारिस्थितिक संतुलन की मरम्मत, रखरखाव और सुधार करती है।

इस लेख में, हम जैविक खेती के महत्व, इसके फायदे, और इसके विभिन्न तरीकों पर चर्चा करेंगे। हम यह भी जानेगें कि कैसे जैविक खेती से हम अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं और अपने पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं।

जैविक खेती का अर्थ

खेती की वह प्रणाली जिसमें खेती के लिए हरी खाद, गोबर आदि जैसे जैविक पदार्थों का उपयोग किया जाता है अर्थात् जैविक खेती एक कृषि प्रकिया है जो जानवरों या पौधों से प्राप्त जैविक उर्वरको और कीटनाशकों का उपयोग करती है |

जैविक खेती की मुख्य विशेषताएँ

- कार्बनिक पदार्थ के स्तर को बनाए रखते हुए मिट्टी की दीर्घकालिक उर्वरता की रक्षा करना, मिट्टी की जैविक गतिविधि को प्रोत्साहित करना और सावधानीपूर्वक यांत्रिक हस्तक्षेप करना
- अपेक्षाकृत अघुलनशील पोषक स्रोतों का उपयोग करके अप्रत्यक्ष रूप से फसल पोषक तत्व प्रदान करना जो मिट्टी के सूक्ष्म जीवों की क्रिया द्वारा पौधे को उपलब्ध कराए जाते हैं|
- फलीदार पौधों और जैविक नाइट्रोजन निर्धारण के उपयोग के माध्यम से नाइट्रोजन आत्मनिर्भरता, साथ ही फसल अवशेषों और पशुधन खाद सहित कार्बनिक पदार्थों का प्रभावी पुनर्चक्रण|
- खरपतवार, रोग और कीट नियंत्रण मुख्य रूप से फसल चक्र, प्राकृतिक शिकारियों, विविधता, जैविक खाद, प्रतिरोधी किस्मों और सीमित (अधिमानतः न्यूनतम) थर्मल, जैविक और रासायनिक हस्तक्षेप पर निर्भर करता है
- पशुधन का व्यापक प्रबंधन, पोषण, आवास, स्वास्थ्य, प्रजनन और पालन के संबंध में उनके विकासवादी अनुकूलन, व्यवहार संबंधी आवश्यकताओं और पशु कल्याण के मुद्दों पर पूरा ध्यान देना|
- व्यापक पर्यावरण और वन्यजीवों और प्राकृतिक आवासों के संरक्षण पर खेती प्रणाली के प्रभाव पर सावधानीपूर्वक ध्यान देना

जैविक खेती की आवश्यकता

- रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है।
- रसायनों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी, पानी और वायु प्रदूषण होता है।
- पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करना।
- सतत विकास को बढ़ावा देना।
- सस्ती खेती।
- खाद्य सुरक्षा के कारण जैविक उत्पादों की मांग में वृद्धि।

जैविक खेती के प्रकार

जैविक खेती दो प्रकारों में विभाजित है, अर्थात्:

- एकीकृत जैविक खेती एकीकृत:- जैविक खेती में पारिस्थितिकी आवश्यकताओं और मांगों को पूरा करने के लिए कीट प्रबंधन और पोषक तत्व प्रबंधन का एकीकरण शामिल है।
- शुद्ध जैविक खेती :- शुद्ध जैविक खेती का अर्थ है सभी अप्राकृतिक रसायनों से बचना। खेती की इस प्रक्रिया में, सभी उर्वरक और कीटनाशक प्राकृतिक स्रोतों जैसे कि अस्थि चूर्ण या रक्त चूर्ण से प्राप्त किए जाते हैं।

जैविक खेती हेतु प्रमुख जैविक खाद एवम् दवाईयाँ

जैविक खाद

- नाडेप
- बायोगैस स्लरी
- वर्मी कम्पोस्ट
- हरीखाद
- जैव उर्वरक
- गोबर की खाद
- पिट कम्पोस्ट
- मुर्गी की खाद

जैविक पद्धति द्वारा व्याधि नियंत्रण के कृषकों के अनुभव

- गौ मूत्र
- नीम पत्तीका घोल
- मठ्ठा
- मिर्च/ लहसुन
- लकड़ी की राख
- नीम व करंज खली

जैविक खेती के फायदे

- किफायती: जैविक खेती में फसल बोने के लिए किसी महंगे उर्वरक, कीटनाशक या हाइब्रिड बीज की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिए, कोई अतिरिक्त खर्च नहीं है.
- निवेश पर अच्छा रिटर्न: सस्ते और स्थानीय इनपुट के उपयोग से, किसान निवेश पर अच्छा रिटर्न कमा सकता है।
- उच्च मांग: भारत और दुनिया भर में जैविक उत्पादों की भारी मांग है, जो निर्यात के माध्यम से अधिक आय उत्पन्न करते हैं।

- पोषण संबंधी: रासायनिक और उर्वरक-प्रयुक्त उत्पादों की तुलना में, जैविक उत्पाद अधिक पौष्टिक, स्वादिष्ट और स्वास्थ्य के लिए अच्छे होते हैं।
- पर्यावरण के अनुकूल: जैविक उत्पादों की खेती रसायनों और उर्वरकों से मुक्त होती है, इसलिए यह पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाती है।
- जैविक खाद को सम्पूर्ण पादप भोजन माना जाता है |

जैविक खेती के नुकसान

- अक्षम: जैविक खेती का मुख्य मुद्दा अपर्याप्त बुनियादी ढांचे और उत्पाद के विपणन की कमी है।
- कम उत्पादन: जैविक खेती के माध्यम से प्राप्त उत्पाद प्रारंभिक वर्षों में रासायनिक उत्पादों की तुलना में कम होते हैं। इसलिए, किसानों को बड़े पैमाने पर उत्पादन को समायोजित करना मुश्किल लगता है।
- कम जीवन: जैविक उत्पादों में रासायनिक उत्पादों की तुलना में अधिक दोष और कम जीवन होता है।
- सीमित उत्पादन: मौसम के बाद या पहले वाली फ़सलें सीमित हैं और जैविक खेती में कम विकल्प हैं

निष्कर्ष

जैविक खेती एक ऐसी विधि है जो न केवल हमारे पर्यावरण को संरक्षित करती है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य को भी सुरक्षित रखती है। इस विधि में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार होता है और फसलों की पोषण मूल्य में वृद्धि होती है। जैविक खेती से हम अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं और अपने पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं। आज के समय में, जब हमारा पर्यावरण और स्वास्थ्य खतरे में है, जैविक खेती एक महत्वपूर्ण विकल्प है। हमें अपने खेतों में जैविक विधियों को अपनाना चाहिए और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग कम करना चाहिए। सरकार और सामाजिक संगठनों को भी जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहिए। अंत में, जैविक खेती हमारे भविष्य की खेती की दिशा है, और हमें इसको अपनाने में संकोच नहीं करना चाहिए।

सन्दर्भ

1. जैविक खेती. (n.d.). जैविक खेती किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग. Retrieved September 22, 2024, from https://mpkrishi.mp.gov.in/hindisite_New/gudwatta_Jaivik_Kheti.aspx .
2. Rodale Institute. (2018, October 15). जैविक खेती के तरीके - Rodale Institute. https://rodaleinstitute.org/hi/why-organic/organic-farming-practices/